
राजस्थान के ऊर्जा संसाधन - खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस

डॉ. हरलाल मील

विभागाध्यक्ष एवं सहायकाचार्य

भूगोल विभाग,

एस.एस.जी पारीक पी.जी. कॉलेज,

जयपुर (राज.), भारत

सारांश

मानव प्राचीनकाल से ही आर्थिक उद्योगों में उत्पादन, वितरण तथा परिवहन आदि के लिए अपनी शारीरिक शक्ति तथा पशुओं की शक्ति का प्रयोग करता रहा है। बाद में मनुष्य ने पवन और बहते जल के द्वारा चक्कियों और यन्त्रों को चलाना प्रारम्भ कर दिया। 18वीं सदी की औद्योगिक क्रान्ति के बाद से कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस और जल विद्युत का प्रयोग शक्ति संसाधन के रूप में किया जाने लगा। वर्तमान में औद्योगिक शक्ति के पाँच साधन हैं- कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, बहता हुआ जल एवं आणविक ईंधन।

संसाधन मानव द्वारा आकलित तथा भरोसा किया हुआ किसी वस्तु या पदार्थ का वह गुण या क्षमता व कार्य या सक्रियता है जो मानव की परिसम्पत्ति बन जाता है। इसके स्वरूप को स्पष्ट करने से

पूर्व संसाधन का अर्थ जानना आवश्यक है। 'संसाधन' ष्मेवनतबमेष् षब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। ष्मेवनतबमेष् शब्द ष्मष् ष्मेवनतबमेष् शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् दीर्घ अवधि के साधन। इस प्रकार संसाधन वह वस्तु है जिन पर लम्बी अवधि तक मानव समाज निर्भर रहता है।

समाज विज्ञान कोष के अनुसार- “संसाधन मानवीय पर्यावरण के वे पक्ष हैं जिनके द्वारा मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में सुविधा होती है तथा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है।” बाउमैन के अनुसार- “संसाधन होते नहीं बनते हैं।”

जेम्स फिषर के अनुसार- “संसाधन वह कोई भी वस्तु है जो मानवीय आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति करता है।”

प्रत्यक्ष संसाधन- वे संसाधन जो हमारे बीच मौजूद हो तथा जिन्हें हम देख सकते हैं, जैसे- मिट्टी, लकड़ी, पत्थर आदि।

अप्रत्यक्ष संसाधन- वे संसाधन जिन्हें हम मात्र अनुभव कर सकते हैं देख नहीं सकते, जैसे- हवा।

पातालीय संसाधन- हमारी पृथ्वी के भीतर मौजूद वे प्राकृतिक संसाधन जिन्हें हम बिना खुदाई किए पता नहीं लगा सकते जैसे- कोयला, पेट्रोलियम, यूरेनियम आदि।

ऊर्जा पारिस्थितिकी सन्तुलन का प्रमुख प्रेरक है। पर्यावरण में जैव एवं अजैव तत्वों के बीच अन्तः प्रक्रिया ऊर्जा प्रवाह पर ही निर्भर होती है। ऊर्जा प्रवाह के अन्तर्गत सूर्य से प्राप्त ऊर्जा उसका एक तत्व से दूसरे तत्व में आवर्तन, भण्डारण तथा अन्त में वायुमण्डल में

निस्तारण भी शामिल है। मानव पर्यावरण से ही अपनी तकनीकी द्वारा संसाधनों का सृजन करता है। ऊर्जा का नियन्त्रण विविध रूपों में होता है जिसे हम ऊर्जा के प्रकार कहते हैं, अतः ऊर्जा नियन्त्रण की वह शक्ति है जिससे मनुष्य आर्थिक क्रियाकलाप सम्पादित करता है। इसलिए इन्हें शक्ति संसाधन भी कहते हैं।

पैट्रोलियम संसाधन

Petroleum शब्द लैटिन भाषा के शब्दों "Petra" "Olium" शब्दों से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ क्रमशः शैल\$तेल है, अर्थात् इसका भौतिक अर्थ शैल (चट्टान) से प्राप्त होता है। पेट्रोल आज मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। आधुनिक जीवन की सुख-सुविधाओं की तो बात छोड़िए इसके बिना जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी सम्भव नहीं है। आज पैट्रोलियम विकास का प्रतीक है।

स्थल, जल और वायु यातायात में क्रान्ति लाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसके कारण निम्न हैं-

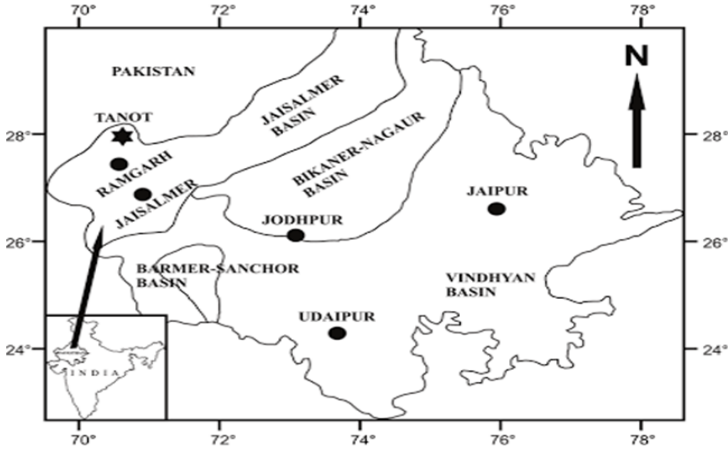
1. कम कीमत में आसानी से पहुँच योग्य।
2. मशीनों के लिए अधिक स्नेहक युक्त।
3. मशीनों की ऊँची गति हेतु उपयोगी।
4. अधिक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत।
5. औद्योगीकरण के विकेन्द्रीकरण हेतु लाभदायक।

राजस्थान में पैट्रोलियम भण्डार-

सर्वप्रथम 1956 में भारत सरकार ने राजस्थान में हवाई

चुम्बकीय सर्वेक्षण द्वारा प्राकृतिक गैस का पता लगाया था। स्वतंत्रता से पूर्व ही डॉ. डी एन वाडिया ने इस बात की स्पष्ट आशा व्यक्त की कि यदि थार मरुस्थल के सम्भावित हाइड्रोकार्बन जमावों को खोजा जा सकता है तो इससे देश की आवश्यकता पूर्ति हो सकती है। पाकिस्तान में सुई नामक स्थान पर 1975 में विशाल प्राकृतिक गैस के भण्डारों का पता चला था, चूँकि यह स्थान भारत-पाक सीमा से मात्र 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। अतः भारतीय भू-गर्भ शास्त्रियों ने भारत में भी ऐसे ही विशाल गैस के भण्डार होने की सम्भावना व्यक्त की जो सही निकली।

राजनैतिक शिथिलता तथा केन्द्र में राजस्थान के प्रभावशाली प्रतिनिधि के अभाव में राज्य की इस ओर प्रयास की जाने वाली योजनाएँ एकाधिक कारणों से बार-बार ठण्डे बस्ते में दबा दी जाती रहीं। फिर भी इस ओर भारत सरकार एवं राज्य सरकार ने जो प्रयास किए उसके सुपरिणाम निकले हैं जो आपके समक्ष हैं। राजस्थान के तेल क्षेत्र बीकानेर, जैसलमेर के जुरैसिक युग के चूना पत्थर क्षेत्रों में मिलता है। ऑइल इण्डिया ने राजस्थान में प्रथम चरण में खुदाई के लिए 41 करोड़ रुपये व्यय किए थे। इसमें से विश्व बैंक ने इस कार्य के लिए 27 करोड़ रुपये व्यय किए थे।



जैसलमेर के तेल व गैस क्षेत्र

जैसलमेर बेसिन से प्राकृतिक गैस का उत्पादन वर्ष 1994 से जारी है तथा शाहगढ (जैसलमेर) क्षेत्र में ैल्स फील्ड से प्राकृतिक गैस का उत्पादन 8 जुलाई 2010 से प्रारम्भ हो गया है।

तनोट

राजस्थान का प्रथम तेल कुआं तनोट के समीप खोदा गया जो 3500 मीटर गहरा है। यह क्षेत्र भारत-पाक सीमा के समीप स्थित है। अतः ऑइल इण्डिया लिमिटेड ने 25 किमी पहुँच सड़क इस कार्य की सुविधा हेतु बनाई है।

मनिहारी टिब्बा

इस क्षेत्र की खोज के बाद कोई उचित कार्यवाही नहीं हो पाई जबकि अन्य भण्डारों का अच्छा विकास हो गया। प्राकृतिक गैस एवं तेल आयोग ;च्छब्द के अथक प्रयासों के फलस्वरूप जैसलमेर शहर के उत्तर-पश्चिम में मनिहारी टिब्बा एवं इसके निकटतम स्थित

कमली ताल क्षेत्र में गैस मिली थी, जो कि अत्यधिक ज्वलनशील गैस है।



सादेवाला

जैसलमेर शहर से 145 किमी दूर इस क्षेत्र में खनिज तेल एवं गैस के भण्डार (मार्च 1984) मिले हैं। सादेवाला से पाकिस्तान सीमा केवल 6 किमी की दूरी पर है। इस क्षेत्र में गैस के भण्डारों की विद्यमानता के पश्चात् जैसमेर जिला तेल व गैस की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो गया है।

घोटारू

सर्वप्रथम यहाँ मई 1983 में गैस के भण्डार पाए गए थे। यहाँ के भण्डारों में हिलियम व मिथेन गैस की मात्रा अधिक पाई जाती है। इस गैस क्षेत्र पर सीमेण्ट प्लाण्ट एवं विद्युतगृह स्थापित करने की योजना प्रस्तावित है।

5. **लोंगेवाला-** लोंगेवाला एवं इसके आस-पास के स्थानों पर गैस का पता पूर्व में ही लग चुका था किन्तु खुदाई कार्य 15 जनवरी 2000 से प्रारम्भ हो पाया। यहाँ कुएँ 1700 मीटर तक खोदे गए हैं।

6. **डाण्डेवाला-** जैसलमेर के इस क्षेत्र में 6 जुलाई 1990 को प्राकृतिक गैस के भण्डारों की खोज की गई। यहाँ से प्रतिदिन 4 लाख क्यूबिक मीटर गैस उपलब्ध होती है, जिनसे एक बिजलीघर व कुछ गैस आधारित उद्योग चलाए जा रहे हैं।

चिन्नीवाला

यहाँ मिथेन गैस के साथ तेल प्राप्त हुआ है जो मामूली शोधन के बाद हवाई जहाज में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। जैसलमेर जिले के तेल व गैस भण्डारों वाले क्षेत्र में कुल 140 करोड़ 70 लाख घन मीटर तेल व गैस के भण्डारों का पता लगा है। इसमें से 54.22 करोड़ घन मीटर तेल व गैस का विदोहन किया जा सकता है। इन तेल व गैस भण्डारों में सर्वाधिक भण्डार मनियारी टिब्बा व घोटारू क्षेत्र में हैं।

वर्तमान में प्राकृतिक गैस ऑइल इण्डिया और क्लॉस् द्वारा उत्पादन किया जा रहा है वहीं जैसलमेर बेसिन के भाग्यवाला में मिले गैस भण्डार से रामगढ गैस बिजलीघर को प्रतिदिन 9.8 लाख घन मीटर गैस की आपूर्ति हो रही है, मगर इन आषातीत सफलताओं के बावजूद यहाँ अन्य दो बेसिन में खोज का काम नगण्य है। वहीं इन दो बेसिनों में भी काफी बड़ा हिस्सा अछूता है।

कोल बेड मिथेन परियोजना

बीकानेर क्षेत्र में लगभग 950 मिलियन घन मीटर कोल बेड मिथेन के भण्डार मिलने की सम्भावना है। जिसके दोहन से बीकानेर क्षेत्र में लगभग 5500 मेगावाट के विद्युत संयंत्र अथवा 2500 टन प्रतिदिन क्षमता के यूरिया प्लांट एवं बीकानेर स्थित सिरैमिक इण्डस्ट्रीज को ईंधन की आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी।

बाड़मेर जिले के तेल व गैस क्षेत्र

राजस्थान के बाड़मेर एवं जालौर जिले के करीब 3111 वर्ग किमी क्षेत्र में कम्पनी ने अपने खोज कार्य किए और 200 कुओं की खुदाई करने पर 25 स्थानों पर तेल एवं गैस मिलने में सफलता हासिल की। इनमें मंगला, भाग्यम, ऐष्वर्या एवं रागेश्वरी प्रमुख हैं। सूत्रों ने बताया कि यहां से तेल परिवहन को सुगम बनाने के लिए करीब 670 किमी लम्बी गर्म पाईप लाईन मंगला से भोगत, गुजरात तक बिछाई गई है। इस रास्ते में 36 स्थानों पर तेल को गर्म करने के लिए हीटिंग स्टेशन बनाए गए हैं। इससे तेल परिवहन की लागत 9 डॉलर प्रति बैरल से कम हो कर अब 4 डॉलर ही रह गई है। राज्य के बाड़मेर-सांचैर बेसिन से पिट ऑइल का व्यवसायिक उत्पादन शुरू हो चुका है। यहाँ से प्रतिदिन 4-5 हजार बैरल तेल निकाला जाएगा जिसे 1.5 लाख बैरल तक प्रतिदिन बढ़ाया जाएगा। यहाँ के तेल के कुएं निम्न हैं-

भाग्यम

भाग्यम तेल क्षेत्र के मध्य 320 वर्ग किमी क्षेत्र में 3.क् भूकम्पीय सर्वेक्षण की योजना है। बाड़मेर-सांचेर बेसिन में केयर्न कम्पनी ने 91 तेल कुओं की खोज की है। इस



बेसिन में 2000 मिलियन बैरल क्षमता से ज्यादा वाले 12 तेल भण्डार- मंगला, ऐष्वर्या, रागेश्वरी, कामेश्वरी, वंदना, षक्ति, सरस्वती, भाग्यम, विजया, गुढा एवं छट.01 हैं। हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय इनमें व्यवसायिक उत्पादन के विकास की योजना बना रहा है। मंगला और भाग्यम को आपस में कुड आॅयल से जोड़ा गया है जो मंगला प्रोसेसिंग टर्मिनल ;डच्छ्द्व नाम से जाना जाता है।

मंगला

बाड़मेर के कवास क्षेत्र से 11 किमी दूरी पर स्थित यह कुंआ राज्य का सबसे बड़ा तेल भ से उत्पादन एवं 33 को इन्जैक्ट किया जा

चुका है। केयरन इण्डिया एनर्जी की ओर से थार के मंगला क्षेत्र से 29 अगस्त 2009 से तेल उत्पादन का कार्य शुरू किया गया। ण्डार है। इस कुंए में विगत 20 वर्षों में देश में जमीन पर मिले सबसे बड़े तेल भण्डार का तोहफा राष्ट्र को 10 जनवरी 2004 को दिया था। 310 करोड़ बैरल के इस तेल भण्डार को मंगला नाम दिया गया। मंगला में कुल 148 कुंओं का ड्रिलिंग किया है जिनमें 96 कुंओं



ऐश्वर्या

ऐश्वर्या क्षेत्र राजस्थान ब्लॉक में तीसरी सबसे बड़ी खोज है। कम्पनी ने यहाँ दिसम्बर 2011 से कार्य प्रारम्भ कर दिया है। बाड़मेर जिले के ऐश्वर्या आँयल फील्ड से तेल के व्यवसायिक उत्पादन की औपचारिक शुरुआत 23 मार्च 2013 को केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री मोड़ली ने की। केयरन इण्डिया ने 23 मार्च 2013 को 5वें आँयल

फील्ड ऐष्वर्या से तेल उत्पादन षुरू कर दिया है। मंगला, भाग्यम और ऐष्वर्या की यह तिकड़ी ष्टट।ष के नाम से जानी जाती है।

बाड़मेर-सांचैर बेसिन में मंगला, भाग्यम और ऐष्वर्या सहित अन्य ब्लॉक में 175000 बैरल का उत्पादन प्रतिदिन हो रहा है। यह देश में कुल उत्पादन का 20 प्रतिशत से अधिक है। इसमें पिछली तिमाही में 0.8 बिलियन डॉलर के समकक्ष निर्यात राषि की बचत हुई है।

सरस्वती

सरस्वती से 27 मई 2011 से खनिज तेल का उत्पादन हो रहा है।

रागेश्वरी

मंगला तेल कुंए से 75 किमी दूर इस क्षेत्र से गैस भण्डार से व्यवसायिक उत्पादन की औपचारिक षुरूआत 23 मार्च 2012 को की गई जिसका उत्पादन 23 मार्च 2013 को प्रारम्भ हुआ।

गेल इण्डिया के साथ राज्य सरकार का करार हुआ है। यहाँ की गैस गुजरात को देने की बजाय इसका उपयोग बाड़मेर और जोधपुर सहित अन्य षहरों में किया जाए। गैस का उपयोग फर्टीलाइजर और घरेलू उपयोग के लिए किया जा सकता है। रागेश्वरी से गैस उत्पादन 10 लाख घन मीटर प्रतिदिन होगा। पैट्रोलियम विभाग के अधिकारियों के मुताबिक यह गैस पाइप लाइन से सालाना भेजी जाने की तैयारी थी लेकिन मुख्यमंत्री ने इसका इस्तेमाल राज्य में ही करने

की प्राथमिकता देने को कहा है। इस गैस से 200 मेगावाट बिजली प्रतिदिन पैदा की जा सकती है।

बायतु

यह स्थान मंगला के दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

जोगसरिया

कवास क्षेत्र के पास खोद गए कुंए में 450 से 110 मिलियन बैरल तेल का भण्डार मिला है। वल्ड आॅयल एण्ड गैस असेम्बली ने बताया है कि राज्य के जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर आदि जिलों में करोड़ों टन गैस के भण्डार विद्यमान हैं।

सूरतगढ (गंगानगर) गैस क्षेत्र

हजीरा

सूरतगढ के पास स्थित हजीरा में 18 मिलियन क्यूसेक फीट गैस का भण्डार मिला है जिसमें से वर्तमान में 5 मिलियन क्यूसेक फीट का ही उपयोग हो रहा है। यहाँ एक पेट्रोलियम कॉम्प्लैक्स बनाया जा रहा है।

विदेशों के सहयोग से बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, नागौर व जोधपुर जिलों के विविध क्षेत्रों से गैस व तेल प्राप्ति हेतु विषिष्ट भू-चुम्बकीय सर्वेक्षण एवं विशेष स्थानों पर कुंए खोदने के प्रयास युद्ध स्तर पर किए जा रहे हैं। विभागीय सूत्रों के अनुसार देश में 112 मिलियट टन से ज्यादा तेल की प्रतिवर्ष माँग है, जिसमें से करीब 80 मिलियन टन कच्चा तेल सालाना आयात करना पड़ता है। वर्तमान में कुल खपत का 30 प्रतिशत उत्पादन ही देश में हो रहा है।

राज्य में जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ेगा वैसे-वैसे राज्य की आय में बढ़ोतरी की जाएगी। राज्य सरकार ने तेल के कुंओं की खोज होने के बाद केन्द्र सरकार से पेट्रोलियम से होने वाले लाभ में भी हिस्सा मांगा है। राज्य से निकलने वाला कच्चा तेल शुद्ध होने के लिए मथुरा तेल रिफायनरी को भेजा जाएगा।

पेट्रोल भण्डार होने के आरम्भिक अनुमान ब्रिटिश काल से ही लगा लिए गए थे लेकिन इस तरफ ध्यान स्वतन्त्रता के बाद भी कई दशकों तक नहीं दिया गया। खोज के जो काम किए गए उनमें संकल्प का अभाव रहा, अन्यथा जो सफलता केयर्न कम्पनी को अब मिली है वह पहले भी मिल सकती थी। यह सुनिश्चित है कि हाइड्रोकार्बन भण्डार राज्य में विपुल मात्रा में हैं जरूरत है तो उन्हें खोजने की।

राज्य में तेल उत्खनन कर रही केयर्न एनर्जी के साथ 30 प्रतिशत हिस्सेदारी ओ.एन.जी.सी. के साथ है। अभी तक कम्पनी ने भारत में 1.25 अरब डॉलर का निवेश किया है।

New Barmer refinery MoU to save state ₹40,000 crore

Pic: Anind Sha

Fuels Produced Will Meet BS-VI Specifications

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: After prolonged negotiations that lasted over three years, Rajasthan government on Tuesday signed a revised MoU with HPCL for a 9 million metric tonne crude oil refinery at Barmer that would require investments of Rs 43,129 crore and produce fuels meeting BS-VI specifications.

► **RELATED REPORTS, P 4**

Announcing the details, Union minister of state for petroleum and natural gas Dharmendra Pradhan said the deal will save the state Rs 40,000 crore with annual viability gap funding of Rs 1,123 crore for 15 years instead of Rs 3,736 crore as per the previous MoU that former CM Ashok Gehlot signed with HPCL.

RAJ GOVT SIGNS DEAL WITH HPCL



Principal secretary, mines & petroleum, Aparna Arora and HPCL director general, Vinod S Shenoy signing the MoU on Tuesday in the presence of Union petroleum minister Dharmendra Pradhan and CM Vasundhara Raje

TALE OF TWO MoUs: Here's how the new agreement is different from the earlier one signed under former CM Ashok Gehlot...

	NOW		EARLIER
Project cost	₹43,129 crore	Project cost	₹37,229 crore
Annual viability gap funding (VGF) by GoR	₹1,123 crore	VGF by state government	₹3,736 crore
VGF over 15 years	₹16,845 crore	VGF over 15 years	₹56,040 crore
Fuel specification	BS-VI	Fuel specification	BS-III

अत्याधुनिक व पेट्रोकेमिकल रिफाइनरी: पचपदरा

राजस्थान के बाड़मेर जिले के पचपदरा में अत्याधुनिक रिफाइनरी व पेट्रोकेमिकल परिसर की स्थापना हेतु 19 अप्रैल 2017 को राजस्थान सरकार और हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। रिफाइनरी पर करीब 43129 करोड़ रुपये खर्च आने का अनुमान है। इस रिफाइनरी के लिए दूसरी बार यह समझौता हुआ है। मौजूदा करार के मुताबिक प्रस्तावित रिफाइनरी में 74 प्रतिशत हिस्सेदारी एचपीसीएल की होगी जबकि 26 प्रतिशत राजस्थान सरकार की होगी। प्रस्तावित रिफाइनरी में भारत मानक-6 स्तर का पेट्रोल और डीजल का उत्पादन होगा। रिफाइनरी से राजस्थान का विकास तेज होगा। लाखों युवकों को रोजगार मिलेगा साथ ही प्रदेश सरकार को करों के माध्यम से करोड़ों रुपये का राजस्व प्राप्त होगा। कम्पनी बाड़मेर क्षेत्र में 27 हजार करोड़ रुपये का निवेश

करेगी। पचपदरा में लगने वाली रिफाइनरी के लिए एचपीसीएल की तीन सदस्यीय टीम ने पचपदरा पहुँचकर रिफाइनरी के लिए आंवटित 12 हजार 34 बीघा जमीन की लीज डीड एचआरआरएल नाम करवाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। रिफाइनरी स्थल तक बिजली पानी एप्रोच रोड के लिए कम्पनी ने प्रयास तेज कर दिए हैं। आने वाले समय में रिफाइनरी को नाचना से आईजीएनपी का पानी देय होगा लेकिन वर्तमान में रिफाइनरी के निर्माण में दौरान जो पानी की आवश्यकता होगी इसके लिए उम्मेद सागर-धवा-कल्याणपुरा-समदड़ी (जोधपुर-बाड़मेर) पेयजल परियोजना के नागाणा आँवर हैड टैंक से पाईप लाईन रिफाइनरी स्थल तक बिछाने का प्लान है।

मुख्य बातें

1. पानी के लिए नाचना से इंदिरा गांधी नहर परियोजना का पानी लाने के लिए स्थाई रूप से पाईप लाईन बिछाई जाएगी।



2. बिजली के लिए बातोतरा-आसोतरा फांटा स्थित 220 केवी जीएसएस से लाईनें बिछाने का काम शीघ्र ही आरम्भ होगा।

3. करीब 2 किमी एप्रोच रोड बनाकर रिफाइनरी स्थल को हाई-वे से जोड़ा जाएगा।

4. रिफाइनरी स्थल पचपदरा से गुजरात बन्दरगाह तक करीब 650 किमी लम्बी 30 इंच चौड़ी पाईप लाईन बिछाने का काम भी किया जाएगा।

निश्कर्ष

वर्ष 2009 तक राज्य में तेल उत्पादन शून्य था अर्थात् राजस्थान तेल उत्पादन की सूची में ही नहीं था परन्तु 2015 तक मात्र 6 वर्ष में ही प्रदेश ने 30 करोड़ बैरल तेल का आँकड़ा पार कर लिया है।

“भारत में सबसे अधिक कच्चा तेल बॉम्बे हाई से निकाला जा रहा है जहाँ कि समन्दर है, हम तो रेत के समन्दर से तेल निकाल रहे हैं, जो कि राज्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है।”

राज्य की इस अनूठी विशेषता को देखते हुए राज्य में मिले भण्डारों का पूरा लाभ उठाने के लिए राज्य सरकार को पूर्णतः सूझबूझ का परिचय देना होगा तथा तेल और गैस के खोज कार्य की तरफ विशेष ध्यान देना होगा। जिन क्षेत्रों में यह कार्य चल रहा है वहाँ सड़क, पानी, बिजली जैसी आधारभूत सुविधाएँ प्रदान करना प्राथमिकता होनी चाहिए। तेल और गैस की सम्भावनाओं को देख इस बारे में हमें पूर्ण रूप से सावचेत होना चाहिए। पूर्व में हमारा एक लम्बा समय विभिन्न तेल कम्पनियों की अक्षमता एवं लापरवाही के कारण निकल चुका है

राज्य सरकार को रिफायनरी/तेल षोधन संयंत्र लगाने के मार्ग में आने वाली हर बाधा को एक चुनौती समझकर उसे पूरा करना होगा। किसी भी तरह की राजनीति या क्षेत्रीयता की भावना इसमें रूकावट न डालने पाए, इसके बारे में राज्य सरकार को अपने आप को सुनिश्चित करना होगा। रिफायनरी से होने वाले लाभों को समझना होगा। इससे न केवल प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा बल्कि अप्रत्यक्ष रोजगार का भी सृजन होगा। उर्वरक और रासायनिक संयंत्रों की स्थापना का मार्ग भी प्रशस्त होगा। थार मरुस्थल का कायापलट हो जाएगा। राज्य न केवल बिजली की कमी की समस्या से निजात पा सकेगा बल्कि ऊर्जा की सर्वाधिक जरूरत वाले संयंत्रों के लिए भी उपयोगी बन सकेगा। वर्तमान स्थिति के अनुसार हमें अवसर का उपयुक्त लाभ उठाने की आवश्यकता है। राज्य के पेट्रोलियम निदेशालय को गतिशील बनाने की ओर कदम उठाए जाने चाहिए। राज्य सरकार केन्द्र के समक्ष जहाँ भी जरूरत हो पुरजोर ढंग से अपना पक्ष रखे। राज्य के सभी सांसदों के द्वारा इस बड़े कार्य को पूरा करने के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर राज्य सरकार का साथ देने के लिए तैयार रहना चाहिए। जिसकी पहल राज्य सरकार को ही करनी होगी इस कार्य को दिशा देने में राज्य सरकार ने नई पहल रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल परिसर बनाने के रूप में की है। जिससे बाड़मेर को अभी तक केवल रेगिस्तान के तौर पर ही जाना जाता था लेकिन अब इस क्षेत्र में नई रिफाइनरी बनने से आने वाले दिनों में बाड़मेर ही

राजस्थान की अगुवाई करेगा। इस प्रकार से राज्य को ऊपर उठाने के लिए कठोर निर्णय लेने होंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान का भूगोल, लेखक पी. के. शर्मा एवं प्रीती मिश्रा, पारीक पब्लिकेशन, जयपुर।
2. राजस्थान का भूगोल, डॉ. एल. आर. भल्ला, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर।
3. राजस्थान का भूगोल, हरि मोहन सक्सैना, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. राजस्थान भूगोल एवं अर्थव्यवस्था, डॉ. राजेन्द्र सिंह राठौड़ एवं सुभाष चारण आर.बी.डी पब्लिकेशन, जयपुर।

संकेतशब्द

1. जैसलमेर के तेल व गैस क्षेत्र
2. बाड़मेर जिले के तेल व गैस क्षेत्र